रस-स्वरुप विवेचन

एम्.ए – II सेमेस्टर

डॉ उमा शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
एन.ए.एस (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

चतुर्थ उल्लासः

रस स्वरूप

आचार्य मम्मट ने काव्य में रस को प्रधान माना है इसके स्वरूप-विवेचन में आचार्य मम्मट ने भरतमुनि के **'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः'** (रससूत्र) को आधार मानते हुए कारिकाबद्ध रूप से इस सूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की है इनकी कारिकाएँ अभिनवगुप्त की भरतसूत्र-व्याख्या पर आधारित हैं आचार्य मम्मट की कारिकाएँ इस प्रकार हैं

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च,
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः
विभावा अनुभावास्तत् काव्यन्ते व्यभिचारिणः
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः

लोक में रति आदि स्थायी भाव के जो कारण, कार्य और सहयोगी होते हैं वे ही यदि नाटक या काव्य में प्रयुक्त होते हैं तो कारण को विभाव, कार्य को अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव को सहयोगी कहा जाता है उन्ही विभावादि के द्वारा अभिव्यक्त वह रत्यादि स्थायीभाव रस कहलाता है

टिप्पणी

1) कारणान्पथ — सामान्यत: रस का स्वरूप यह है कि विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से परिपुष्ट होकर रति आदि स्थायी भाव आस्वादन-योग्य हो जाते हैं तथा रस कहलाते है।

मानवहृदय में स्नेह (रति), इत्यादि कुछ भाव (चित्तवृत्तियाँ) अविच्छिन्नरूप से रहते है वे सदा ही व्यक्त दशा में नही रहते किन्तु वासना रूप में सूक्ष्मरूपेण विराजमान रहते है।

इन स्नेह आदि भावों के उद्बोध का जो लोक में कारण होता है एक स्नेह (रति) आदि का उत्पादक कारण रमणी आदि और दूसरा उसका परिपोषक कारण चन्द्रोदय आदि - वही लोकोत्तरवर्णनानिपुण कवि कृति में आलम्बन व उद्दीपन विभाव कहा जाता है।

लोक में प्रेम आदि का हृदय में आविर्भाव होने पर जो भ्रुभंग फड़कना आदि चेष्टाएँ होती है वे ही काव्य-भूमि अनुभाव है तथा स्नेह (रति) आदि भाव का आविर्भाव में जो सहकारी कारण निर्वेद आदि होते है वे ही काव्य में व्यभिचारी या संचारी भाव कहलाते है।

3

उदाहरणार्थ - लोक में दुष्यंत के मन में शकुन्तला को देखकर रति भाव का प्रादुर्भाव होता है और उद्यान, चान्द्रिका आदि से उस रति भाव का उद्दीपन होता है। अतः ये रति भाव के कारण है। इसी आधार पर काव्य-नाट्य में वर्णित शकुन्तला आदि श्रृंगार रस के आलम्बन विभाव कहलाते है। तथा उद्यान चान्द्रिका आदि उद्दीपन विभाव।

यह विभाव सामाजिक के हृदय मे वासना रूप में स्थित रति आदि स्थायी भावों को विभावित करते है उनके आस्वाद की योग्यता उत्पन्न करते है। यही विभावना व्यापार है। विभाव द्वारा जब रति आदि स्थायी भाव द्वारा रस का आस्वादन होता है वह विभावना है।

अनुभावन व्यापार से अभिप्राय यह है कि जो कारण के पश्चात जो रस स्फुट होते है। रस उत्पन्न होने पर जो भाव स्फुरित होते है। वह अनुभावन है।
काव्य - नाट्य में भ्रुजाक्षेप आदि के वर्णन का परामर्श करके समाजिक की चितवृति रति आदि भाव में तन्मय हो जाती है। अत: यह अनुभ कहलाते है। ये सात्विक, कायिक और वाचिक

4

भेद से कई प्रकार के होते है सात्विक भाव आठ है-
स्वेद (पसीना आना), स्तम्भ (जड़वत होना), रोमाञ्च स्वरभङ्ग, वेपथु (कम्पन होना) वैवर्ण्य (पीला हो जाना) अश्रु, प्रलय

कटाक्ष, भ्रुआक्षेप आदि कायिक अनुभाव है।
मधुर वचन आदि वाचिक है।